संचार माध्यम

भारतीय जन संचार संस्थान की अर्द्धवार्षिक यूजीसी-केयर सूचीबद्ध शोध पत्रिका

खंड–35, अंक–1 आईएसएसएन : 2321–2608 जनवरी-जून 2023

भारतीय जन संचार संस्थान, नई दिल्ली

संचार माध्यम

भारतीय जन संचार संस्थान की यूजीसी-केयर सूचीबद्ध शोध पत्रिका

खंड 35 (1) | आईएसएसएन: 2321-2608 | जनवरी-जून 2023

विषय सूची

1. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में प्रेस की भूमिका — 1
   प्रो. (डॉ.) संजय द्विवेदी

2. उर्दू पत्रकारिता के गुमनाम पुरोधा — 6
   प्रो. (डॉ.) प्रमोद कुमार

3. साहित्य स्रष्टा गुरु गोबिंद सिंह — 14
   डॉ. नरेश कुमार और डॉ. प्रीति सिंह

4. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम व महात्मा गांधी के जन संचार का 'मैप द माइंड' मॉडल — 21
   डॉ. अमरेंद्र कुमार, अमन कुमार आकाश और यासिर अरफात

5. हिंदी समाचार चैनलों के समक्ष समाचार सामग्री के चयन की चुनौती एवं प्राथमिकताएँ — 27
   रविंद्र कुमार

6. 'आजतक' पर प्रसारित कार्यक्रमों की विषयवस्तु का अध्ययन — 36
   अमित आर्य और डॉ. मैथिली गंजू

7. ट्विटर पर हैशटैग एक्टिविज्म और फेक न्यूज का अध्ययन — 44
   डॉ. शिखा शुक्ला

8. भारतीय रेल द्वारा यात्री सहभागिता हेतु ट्विटर के प्रयोग का अध्ययन — 54
   दिवाकर दुबे और प्रो. मनीषा शर्मा

9. गूगल, फेसबुक और यू-ट्यूब से डिजिटल मीडिया को मिल रही चुनौतियों का अध्ययन — 59
   प्रभात कुमार उपाध्याय और डॉ. मनोज मिश्र

10. छात्रों में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों के प्रति मीडिया साक्षरता का अध्ययन — 63
    प्रदीप डहेरिया और प्रो. पवित्र श्रीवास्तव

11. डिजिटल संचार माध्यम और स्वाधीनता संग्राम की संघर्ष गाथा — 69
    नदीम अख्तर

12. पंजाब का सामाजिक-सांस्कृतिक यथार्थ : पंजाबी पॉप संगीत और लोकगीतों के विशेष संदर्भ में — 79
    डॉ. मलकीत सिंह

13. नागरिक पत्रकारिता : विकल्प, पूरक या सहभागी (संचारविदों और मीडियाकर्मियों की राय) — 86
    लाल बहादुर ओझा

14. भारतीय मीडिया में 'हाइब्रिड वारफेयर' पर विमर्श : प्रमुख अँग्रेजी और हिंदी समाचार पत्रों एवं उनसे संबंधित वेबसाइटों के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन — 95
    डॉ. जयप्रकाश सिंह और संजीव कुमार

15. बांग्लादेश के प्रति चीन की बदलती रणनीतियाँ और प्रिंट मीडिया — 104
    नंदिनी सिन्हा

संचार माध्यम | खंड 35(1) : 14-20, जनवरी-जून 2023
यूजीसी-केयर सूचीबद्ध शोध पत्रिका, आईएसएसएन: 2321-2608

साहित्य स्रष्टा गुरु गोबिंद सिंह

डॉ. नरेश कुमार[1] और डॉ. प्रीति सिंह[2]

सारांश

धर्म का प्रवाह कर्म, ज्ञान और भक्ति इन तीनों धाराओं में ही होता है। वह कर्म के बिना लूला, ज्ञान के बिना अंधा और भक्ति के बिना निष्प्राण रहता है। इन तीनों के सामंजस्य से ही धर्म अपनी पूर्ण सजीव स्थिति में रहता है। किसी एक के अभाव से भी वह अपूर्ण ही रहता है। इन तीनों का समन्वय किसी एक व्यक्तित्व में अगर देखना है तो वह श्री गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज के व्यक्तित्व में देखा जा सकता है। सिख पंथ गुरु परंपरा में गुरु गोबिंद सिंह जी दसवें और अंतिम गुरु के रूप में माने जाते हैं। उनकी राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक एवं साहित्यिक परिस्थितियों एवं उनके जीवनवृत्त से संबंधित प्रमुख घटनाओं पर बार-बार चिंतन-मनन आवश्यक है। वे एक महान् देशभक्त, रूढ़िविरोधी, जातिविरोधी, अपूर्व दूरदर्शी एवं अद्भुत युगद्रष्टा थे। उन्होंने अपने युग की समस्त परिस्थितियों का गहन अध्ययन कर उन्हें नया मोड़ देने का प्रयास किया। गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज का साहित्यिक प्रदेय सदैव स्मरणीय रहेगा। उन्होंने रामायण, महाभारत, श्रीमद्भागवत एवं अन्य पुराणों का हिंदी में अनुवाद करने के लिए अनेक कवियों को नियुक्त किया था। वे जीवनपर्यंत काव्य सृजन करते रहे। उनकी समस्त रचनाएँ दशम ग्रंथ के नाम से अभिहित हैं। 'बचित्र नाटक', 'चंडी चरित्र', 'जपुजी', 'चौबीस अवतार', 'ज्ञानप्रबोध', 'अकाल स्तुति', 'जफरनामा' जैसी उनकी उत्कृष्ट साहित्य रचनाओं की ज्योतिर्मय किरणें सदैव आलोकमयी दिशा की ओर इंगित करेंगी और युगों-युगों तक प्रेरणा स्रोत रहेंगी।

संकेत शब्द : गुरु गोबिंद सिंह, जपुजी, अकाल स्तुति, बचित्र नाटक, चंडी चरित्र, ज्ञान प्रबोध, चौबीस अवतार, मेहंदी मीर, ब्रह्मावतार, रुद्रावतार, शस्त्र नाम माला, चरित्रोपाख्यान, जफरनामा, ज्ञान प्रबोध

प्रस्तावना

गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने साहित्य को समष्टिगत स्तर प्रदान करके तत्कालीन महान् व्यक्तियों को ही प्रभावित नहीं किया, अपितु सामान्य जनमानस के जीवन पर भी अमिट छाप छोड़ी। वे बहुमुखी प्रतिभासंपन्न महाकवि थे। उनकी साहित्यिक कुशलता और काव्य-सृजनात्मक शक्ति अद्भुत थी। उन्होंने विविध विषयों पर रचनाएँ कर हिंदी साहित्य को और अधिक समृद्ध किया। बहुआयामी प्रतिभा से परिपूर्ण व्यक्तित्व के रूप में वे एक संत, योद्धा, विचारक और विद्वान् के रूप में स्मरण किए जाते हैं। वे निर्मला पंथ एवं खालसा पंथ के संस्थापक ही नहीं थे, अपितु एक महान् साहित्य स्रष्टा भी थे। वे एक महान् संत कवि थे और उनके काव्य की चेतना से प्रभावित होकर अनेक लोगों ने काव्य सृजन किया। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन मानव सेवा और सत्य के मार्ग पर चलते हुए बिताया।

'चिड़िया नाल मैं बाज लड़ावाँ, गिदराँ नु मैं शेर बनावाँ।
सवा लाख से एक लड़ावाँ, ताँ गोबिंद सिंह नाम धरावाँ।।

दस गुरु परंपरा के दसवें गुरु के रूप में उन्हें स्मरण किया जाता है। वे अदम्य साहस और वीरता के प्रतीक थे और 'सत श्री अकाल' का उद्घोष कर उन्होंने मुगलों के अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई। उनके जीवन, विचारों और शिक्षाओं में सामंजस्य का भाव है। उन्होंने जिस उद्देश्य से योद्धा की भूमिका का निर्वहन किया, उसके बारे में वे स्वयं लिखते हैं :

हम इह काज जगत सो आए। धर्म हेत गुरुदेव पठाए।।
जहाँ जहाँ तुम धर्म विथारों। दुष्ट देखियन पकरि पधारो।।
धरम चलावन संत उबारन। दुष्ट सभन को मूल उपारन।। (सिंह, 1935)

शोध प्रविधि एवं शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का प्रमुख आधार श्री गुरु गोबिंद सिंह जी की प्रमुख रचनाएँ दशम ग्रंथ, बचित्र नाटक, चौबीस अवतार, जपुजी, अकाल स्तुति, जफरनामा आदि हैं। प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य गुरु गोबिंद सिंह जी के संपूर्ण व्यक्तित्व एवं उनके रचना संसार को प्रकाश में लाना है। गुरु गोबिंद सिंह जी की समस्त रचनाएँ दशम ग्रंथ में प्रकाशित हुई हैं। विभिन्न भाषाओं के ज्ञाता होने के कारण उनकी रचनाएँ विविधताओं से परिपूर्ण हैं। उनके विद्या दरबार में बावन कवियों को आश्रय प्राप्त था, जिनका सम्यक् मार्ग-दर्शन उन्होंने भारतीय साहित्य की समृद्धि के उद्देश्य से किया। 'दशम ग्रंथ' की ये रचनाएँ गुरु गोबिंद सिंह जी की वीरता, उनकी धर्मनिरपेक्षता और कर्तव्य परायणता का ही प्रमाण नहीं है, बल्कि उनकी कवित्व कला का भी प्रामाणिक दस्तावेज हैं। इन रचनाओं में उनका कवि कौशल व्यक्तित्व निखर कर दिखाई देता है। उन्होंने आनंदपुर साहिब में 'विद्या दरबार' की स्थापना की, जिसमें तत्कालीन समाज के सुप्रसिद्ध बावन कवियों को नियुक्त किया। ये कवि विभिन्न भाषाओं के ज्ञाता और चिंतक थे, जिन्होंने अनेक भाषाओं में गुरु गोबिंद सिंह जी के साहित्य को साकार और समृद्ध रूप प्रदान किया।

बचित्र नाटक

भारतीय कवियों तथा लेखकों के संबंध में यह एक विशेष बात दृष्टिगत होती है कि वे अपने जीवन से संबंधित उल्लेखों के प्रति सदैव उदासीन रहे। गुरु गोबिंद सिंह जी महाराज हिंदी के प्रतिभाशाली कवियों में श्रेष्ठ स्थान रखते हैं। उनके जीवन के संबंध में अनेक भारतीय तथा यूरोपीय विद्वानों ने अनेक ग्रंथ लिखे हैं, जो उनके जीवन पर यथेष्ट प्रकाश डालते

[1]सहायक प्रोफेसर, पंजाबी-डोगरी विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला. ईमेल : nareshaman2002@yahoo.co.in
[2]सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला. ईमेल : drpreetisingh10001@gmail.com